औपनिवेशिक शासन के खिलाफ 1857 के पूर्व आंदोलन

पूर्व-औपनिवेशिक भारत में, शासकों और उनके अधिकारियों के खिलाफ लोगों का विरोध असामान्य नहीं था - राज्य द्वारा उच्च भूमि राजस्व की मांग, भ्रष्ट आचरण और अधिकारियों का सख्त रवैया कुछ भड़काने वाले कारक थे। हालाँकि, औपनिवेशिक शासन की स्थापना और उसकी नीतियों का समग्र रूप से भारतीयों पर कहीं अधिक विनाशकारी प्रभाव पड़ा। उनकी शिकायतें सुनने वाला या उनकी समस्याओं पर ध्यान देने वाला कोई नहीं था। कंपनी की रुचि केवल राजस्व निकालने में थी। औपनिवेशिक कानून और न्यायपालिका ने सरकार और उसके सहयोगियों - जमींदारों, व्यापारियों और साहूकारों - के हितों की रक्षा की। इस प्रकार लोगों के पास कोई विकल्प नहीं बचा और उन्होंने हथियार उठाकर अपनी रक्षा करने का फैसला किया। जनजातीय लोगों की परिस्थितियाँ मुख्य भूमि में रहने वाले लोगों से भिन्न नहीं थीं, लेकिन उनकी स्वतंत्र जनजातीय राजनीति में बाहरी लोगों के अतिक्रमण ने उन्हें और अधिक पीड़ित और हिंसक बना दिया।

जन विद्रोह के कारक

कंपनी शासन के विरुद्ध लोगों के आक्रोश और विद्रोह के लिए जिम्मेदार प्रमुख कारक इस प्रकार हैं-

* औपनिवेशिक भू-राजस्व बस्तियाँ, नए करों का भारी बोझ, किसानों को उनकी भूमि से बेदखल करना और जनजातीय भूमि पर अतिक्रमण।

* ग्रामीण समाज में शोषण के साथ-साथ मध्यस्थ राजस्व संग्राहकों, किरायेदारों और साहूकारों की वृद्धि हुई।

* जनजातीय भूमि पर राजस्व प्रशासन के विस्तार के कारण कृषि और वन भूमि पर जनजातीय लोगों का कब्ज़ा ख़त्म हो गया।

* ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं को बढ़ावा देना, भारतीय उद्योगों पर भारी शुल्क, विशेष रूप से निर्यात शुल्क, जिससे भारतीय हथकरघा और हस्तशिल्प उद्योग तबाह हो गए।

* स्वदेशी उद्योग के विनाश से श्रमिकों का उद्योग से कृषि की ओर पलायन हो गया, जिससे भूमि/कृषि पर दबाव बढ़ा।

नागरिक विद्रोह

'सिविल या नागरिक' शब्द में वह सब कुछ शामिल है जो रक्षा/सैन्य से संबंधित नहीं है, लेकिन यहां वह विद्रोह शामिल है जिनका नेतृत्व आम तौर पर अपदस्थ देशी शासकों या उनके वंशजों, पूर्व जमींदारों, जमींदारों, पोलिगर्स (-दक्षिण भारत में, क्षेत्र के धारकों) ने किया था,(जिसमें शासकों- मुख्य रूप से नायक-सैन्य सेवा और श्रद्धांजलि के बदले में), विजित राज्यों के रक्षकों और अधिकारियों, या कभी-कभी धार्मिक नेताओं द्वारा उन्हें दिए गए कुछ गांव शामिल थे। आम तौर पर बड़े पैमाने पर समर्थन किराए पर लेने वाले किसानों, बेरोजगार कारीगरों और विघटित सैनिकों से मिला, हालांकि इन विद्रोहों के केंद्र में तत्कालीन सत्ता-संपन्न वर्ग थे।

नागरिक विद्रोह के प्रमुख कारण

कंपनी शासन के तहत, अर्थव्यवस्था, प्रशासन और भूमि राजस्व प्रणाली में तेजी से बदलाव हुए जो लोगों के खिलाफ थे।

कई जमींदार और पोलिगार जो औपनिवेशिक शासन के कारण अपनी भूमि और उसके राजस्व पर नियंत्रण खो चुके थे, उन्हें नए शासकों के साथ व्यक्तिगत हिसाब-किताब करना पड़ा।

सरकारी अधिकारियों और व्यापारियों और साहूकारों से युक्त एक नए वर्ग द्वारा रैंक में दरकिनार किए जाने के कारण पारंपरिक जमींदारों और पोलिगारों का अहंकार आहत हुआ।

औपनिवेशिक नीतियों के कारण भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों की बर्बादी ने लाखों कारीगरों को गरीब बना दिया, जिनका दुख उनके पारंपरिक संरक्षकों और खरीदारों-राजकुमारों, सरदारों और जमींदारों के गायब होने से और भी बढ़ गया था।

पुरोहित वर्गों ने विदेशी शासन के खिलाफ घृणा और विद्रोह को उकसाया, क्योंकि धार्मिक उपदेशक, पुजारी, पंडित, मौलवी, आदि पारंपरिक जमींदार और नौकरशाही अभिजात वर्ग पर निर्भर थे। जमींदारों और सामंतों के पतन का सीधा प्रभाव पुरोहित वर्ग पर पड़ा।

ब्रिटिश शासकों का विदेशी चरित्र, जो इस भूमि से सदैव पराए रहे, और देशी लोगों के प्रति उनका तिरस्कारपूर्ण व्यवहार ब्रिटिश शासकों के गौरव को ठेस पहुँचाता था।

महत्वपूर्ण नागरिक विद्रोह

सन्यासी विद्रोह (1763-1800)

1770 के विनाशकारी अकाल और अंग्रेजों की कठोर आर्थिक व्यवस्था ने पूर्वी भारत में सन्यासियों के एक समूह को ब्रिटिश हुकूमत से लड़ने के लिए मजबूर कर दिया। मूल रूप से किसान, यहाँ तक कि कुछ ज़मीन से बेदखल किए गए । इन संन्यासियों के साथ बड़ी संख्या में बेदखल छोटे जमींदार,

विघटित सैनिक और ग्रामीण गरीब भी शामिल हो गए। उन्होंने कंपनी के कारखानों और कोषागारों पर छापा मारा और कंपनी की सेनाओं से लड़ाई की। लंबी कार्रवाई के बाद ही वॉरेन हेस्टिंग्स संन्यासियों को अपने वश में कर सका। हिंदुओं और मुसलमानों की समान भागीदारी ने विद्रोह की विशेषता बताई, जिसे कभी-कभी फकीर विद्रोह भी कहा जाता है। मजनूम शाह (या मजनू शाह), चिराग अली, मूसा शाह, भवानी पाठक और देबी चौधुरानी महत्वपूर्ण नेता थे। देबी चौधुरानी की भागीदारी अंग्रेजों के खिलाफ शुरुआती प्रतिरोध में महिलाओं की भूमिका को पहचानती है। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का अर्ध-ऐतिहासिक उपन्यास आनंदमठ संन्यासी विद्रोह पर आधारित है। बंकिम चंद्र ने एक उपन्यास, देवी चौधुरानी भी लिखा, क्योंकि उन्होंने पारंपरिक भारतीय मूल्यों के लिए खतरा पैदा करने वाले विदेशी शासन के खिलाफ संघर्ष में महिलाओं के महत्व को देखा।

जारी.....